❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यजगत की ओर से समस्त देशवासियों को

स्वामी विरजानन्द दण्डी स्मृति दिवस (14 सितम्बर) पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

वर्ष 44, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 सितम्बर, 2021 से रविवार 19 सितम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द जी को नमन

आर्यसमाज के दादागुरु दण्डी स्वामी विजानन्द जी के स्मृति दिवस पर विशेष स्मरण

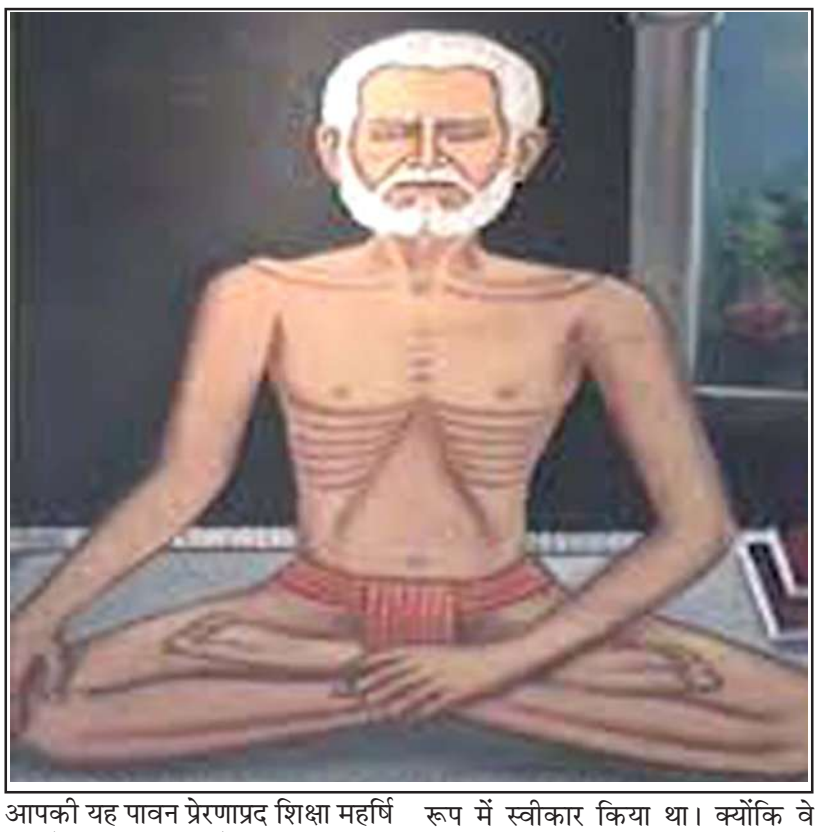

गुरु परंपरा के महान आदर्श प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद दण्डी जी महर्षि दयानंद सरस्वती जी के गुरु थे। स्वामी विरजानंद जी का जन्म पंजाब प्रांत के अंतर्गत करतारपुर के समीपवर्ती किसी ग्राम विशेष में हुआ था। वे शारदा शाखा के सारस्वत ब्राह्मण थे, उनका गोत्र भारद्वाज था। उनके पिता का नाम नारायण दत्त था। 5 वर्ष की अवस्था में ही शीतला रोग के कारण स्वामी विरजानन्द जी प्रज्ञाचक्षु हो गए। 11 वर्ष की अवस्था में उनके माता-पिता का देहांत हो गया। माता-पिता विहीन, नेत्रहीन स्वामी विरजानंद जी ने अत्यंत संघर्ष और कष्टों का सामना किया। लेकिन वह कभी निराश नहीं हुए, उन्होंने स्वयं तप, त्याग,साधना पूर्ण जीवन जीते हुए उन्नीसवीं सदी के अग्रज महापुरुष महर्षि दयानंद सरस्वती जी को विद्या प्रदान कर मानव समाज पर उपकार किया।

व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द जी आर्ष ग्रन्थों के पठन पाठन के पक्षधर थे, आपने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को अष्टाध्यायी और महाभाष्य के माध्यम से व्याकरण पढ़ाया, प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी आपकी स्मरण शक्ति इतनी प्रबल थी कि कठिन से कठिन विषय को भी आप एक बार के श्रवण मात्र से हमेशा के लिए धारण करने में समर्थ थे। महान शिष्य और महान गुरु का मिलन भारत राष्ट्र सहित सम्पूर्ण विश्व के लिए अमृत के समान लाभकारी सिद्ध हुआ। स्वामी विरजानन्द जी की अनेक विशेषताओं में एक प्रमुख विशेषता यह भी थी कि आप प्राचीन वैदिक ऋषि मुनियों की परम्परा को मानने वाले निष्ठावान महापुरुष थे,

आपकी यह पावन प्रेरणाप्रद शिक्षा महर्षि दयानंद जी के जीवन में भी दृष्टिगत होती है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी स्वयं कहते हैं कि अगर मैं प्राचीन ऋषि मुनियों के काल में होता तो उनके सदृश बैठने के काबिल भी नहीं होता, इससे पता चलता है कि स्वामी विरजानन्द जी ने किस तरह महर्षि के मन मस्तिष्क में भारत की कल्याणकारी वैदिक ऋषि परम्परा के प्रति निष्ठा का दीप जगाया था।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने गुरु विरजानन्द जी के प्रति अतिशय अनन्य सेवाभावी थे। गुरु की आज्ञा को सर्वोच्च मानने वाले महर्षि ने कई बार स्वामी विरजानन्द जी की प्रताड़ना को भी प्रसाद रूप में स्वीकार किया था। क्योंकि वे गुरु शिष्य की गरिमा को जानते थे, स्वामी विरजानन्द की उत्तम शिक्षा के साथ साथ उनके मन्तव्य भी श्रेष्ठ थे, जिन्हें महर्षि ने सहर्ष हृदयंगम किया था, स्वामी विरजानन्द अवैदिक मत मतान्तरों को नहीं मानते थे, मनुष्यकृत कपोल कल्पित स्वार्थों से भरी पुस्तकों को स्वीकार नहीं करते थे, वेदों के विरुद्ध असत्य, अज्ञान, अविद्या, अन्याय, अंधकार, ढ़ोंग पाखण्ड पूर्ण मान्यताओं, सिद्धान्तों को वे जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे, अतः एक महान गुरु और महान शिष्य के मिलन से जगत में नया सवेरा उत्पन्न हुआ, स्वामी विरजानन्द जी के सानिध्य में महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने लगभग तीन वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की थी लेकिन इस अल्प अवधि में ही भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में फैले तमस का तिरोहण होना सुनिश्चित हो गया। जब गुरु दक्षिणा का समय आया तो गुरु अपने शिष्य क्या कुछ नहीं मांग सकता था, लेकिन गुरु की श्रेष्ठता तो देखो, स्वामी विरजानन्द जी की उदारता तो देखो, उनकी मानव कल्याण की भावना तो देखो महर्षि दयानंद सरस्वती जी से समाज में फैले अज्ञान, अविद्या, अंधकार से त्राहि-त्राहि कर रही मनुष्यजाति को सुमार्ग दिखाने की दक्षिणा मांगकर एक नए स्वर्णिम इतिहास की नींव रख दी। स्वामी जी के

- ***शेष पृष्ठ 7 पर***

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् में सम्पन्न हुआ विशेष समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरिनगर में संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारी हिमांशु का जन्म दिवस 7 सितंबर 2021 को आर्य समाज के प्रांगण में मनाया गया। दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान, मंत्री श्री सुखबीर सिंह, दिल्ली केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश आर्य एवं आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया। इसके साथ ही प्रतिभा विकास केंद्र के एक छात्र का भी जन्म दिवस मनाया गया। बालकों ने संस्कृत में कोरोना पर एक नाटिका का मंचन भी किया एवं संस्कृत में जन्म दिवस तथा बधाई गीत गाया। जन्मदिनोत्सव यज्ञ एवं मन्त्रपाठ आदि ब्रह्मचारियों द्वारा आचार्य श्री धनंजय शास्त्री के निर्देशन में किया गया। सभी अतिथियों का पटका पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का आर्य संदेश टीवी पर प्रसारण हेतु रिकॉर्डिंग भी की गई, जो शीघ्र ही आर्य संदेश टीवी पर प्रसारित की जाएगी। श्री राकेश आर्य प्रधान आर्य समाज सुदर्शन पार्क द्वारा सभी के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी ने सुंदर कार्यक्रम के आयोजन पर आयोजकों को बधाई दी तथा गुरुकुल को एवं इसकी गतिविधियों को आगे बढ़ाने की कोशिशों में भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। श्री सतीश आर्य ने बालकों को माला पहनाकर स्वागत किया। यह भी निश्चय किया गया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन भविष्य में भी किया जाएगा जिसके अंतर्गत अगला कार्यक्रम 20 सितंबर 2021 को आर्य समाज बी ब्लॉक जनकपुरी में शाम 5 बजे से 7 बजे तक करने का संकल्प लिया जिसमें ब्रह्मचारी अनुव्रत का जन्म दिवस मनाया जाएगा।

कार्यक्रम का संचालन श्री महेंद्र सिंह मंत्री गुरुकुल एवं आर्य समाज ने किया।

देववाणी-संस्कृत

कुशल सारथी की महिमा

वेद-स्वाध्याय

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः।। -ऋ. 6/75/6
ऋषिः पायुर्भारद्वाजः।। देवता - सारथिः, रश्मयः।। छन्दः जगती।।

शब्दार्थ - रथे तिष्ठन् = रथ पर पीछे बैठा हुआ **सुषारथिः** = अच्छा सारथि **पुरः** = आगे लगे हुए, आगे- आगे चलने वाले **वाजिनः** = घोड़ों को यत्र-यत्र **कामयते** = जहां-जहां चाहता है वहां **नयति** = ले-जाता है। **अभीशूनाम्** = बागडोरों की, या मन की वृत्तियों की **महिमानम्** = महिमा की **पनायत** = स्तुति करो, क्योंकि **पश्चात्** = पीछे लगी हुई भी ये **मनः** = मन (सारथि) की **रश्मयः** = रश्मियां, रासें, आगे लगे हुए घोड़ों को **अनुयच्छन्ति** = अपने अनुकूल संयत रखती हैं।

विनय - रथ में पीछे बैठा हुआ भी सारथि आगे-आगे चलने वाले घोड़ों को ऐसा काबू रखता है, अपने वश में रखता है कि उन्हें जिधर चाहता है उधर ही ले जाता है। यह कुशल सारथि की महिमा है, पर पीछे बैठा सारथि आगे लगे हुए घोड़ों से जिस साधन द्वारा अपना सम्बन्ध जोड़े रखता है, जिस साधन द्वारा दूर से ही उन्हें काबू में रखता है, असल में तो उस साधन की अर्थात् अभीशुओं (बागडोर) की स्तुति करनी चाहिए। ये रश्मियां (रासें) ही हैं जो कि घोड़ों को सारथि की इच्छा अनुकूल संयत रखती हैं; घोड़ों को लगाम लगाये रखती हैं। क्या तुमने इन (अभीशुओं) बागडोरों के महत्त्व को समझा? पर ये तो बाहरी अभीशु या रश्मियां हैं। असली रश्मियां तो वे हैं जोकि मन नामक अन्तर ज्योति की वृत्तिरूप किरणें हैं। अन्तरात्मारूपी सूर्य की किरणें ही वास्तविक अभीशु या रश्मियां हैं जिनके द्वारा वह अन्दर का देव बाहर के साथ सम्बन्ध जोड़े हुए है और अपने सब बाह्य जगत् को वश में रख रहा है। वेद ने तो कहा है कि यह मनोदेव ही है जोकि कुशल सारथि की भांति सब मनुष्यों को घोड़ों के समान इधर-उधर लिये फिरता है (यजुः. 34/6)। वास्तव में यह पीछे बैठा हुआ अन्तरात्मा (मनोदेव) अपनी रश्मियों द्वारा ही, अपनी वृत्तियों व सङ्कल्पों द्वारा ही आगे बैठे हुए और स्वतन्त्र दीखनेवाले सब बाह्य जगत् को चला रहा है। हे मनुष्यो! इन मनोवृत्तियों, मनः सङ्कल्पों की महिमा को अनुभव करो। इन रश्मियों को, इन बागडोरों को दृढ़ता से अपने हाथों में पकड़कर कुशल सारथि की भांति अपने-आप को चलाओ, अपने-आप पर शासन करो; अपने शरीर को, अपने हाथ-पैर आदि कर्मेन्द्रियों और अपनी ज्ञानेन्द्रियों को जुड़े हुए अपने घोड़ों की भांति अपनी इच्छानुसार जहां चाहो वहां ले-जाओ और जहां न चाहो वहां न ले-जाओ। वास्तव में इन रश्मियों को हाथ में रखकर तुम जो चाहो वह कर सकते हो। बस, केवल इन मनोवृत्तियों, मनः सङ्कल्पों को दृढ़ता से पकड़ लेने की देर है। फिर तुम अपने-आपको जहां जैसा चलाना चाहोगे वैसे ही तुम्हारी इन्द्रिय आदि सबको चलना होगा। तुम आत्मवशी हो जाओगे, तब तुम देखोगे कि तुम जहां अपने-आपको जैसा चाहते हो वैसा हिलाते हो, वहां अपने सब बाह्य संसार को भी जैसा चाहते हो वैसा हिला रहे हो। यह सब अभीशुओं की, रश्मियों की महिमा है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पेटा की लगाम घोड़ों पर या भारतीय रीति-रिवाजों पर?

पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स इंडिया यानि पशु प्रेमी संस्था पेटा इंडिया ने घोड़ी मुक्त बारात के लिए अभियान चलाया है। इसके लिए दिल्ली, जयपुर, लखनऊ, चंडीगढ़, और मुंब समेत बड़े शहरों में होर्डिंग लगाये गये है। पर इस अभियान के बीच लोग सवाल भी पूछ रहे हैं कि पेटा को हिन्दुओं के त्यौहार या रीति-रिवाजों में ही क्यों खोट नजर आते हैं, जबकि एक समुदाय का तो त्यौहार ही पशुओं के रक्तपात पर टिका है?

असल में पेटा इंडिया ने शादियों में घोड़ों को नियंत्रित करने के लिए नुकीले टुकड़ों का उपयोग करने की क्रूर प्रथा के लिए अभियान चलाया है। हालाँकि अभियान काफी हद तक ठीक भी है। क्योंकि घोड़ों के मालिक घोड़ों को नियंत्रित करने के लिए नुकीली लगाम स्पाइक बिट्स का गैरकानूनी तरीके से इस्तेमाल कर रहे हैं। बताया जाता है इससे बार-बार लगाम कसने से घोड़ों के होंठ और जीभ छिल जाते हैं या कट भी जाते हैं। बेशक ऐसी लगाम लगाने वालों पर कार्रवाही होनी चाहिए। पर क्या ये क्रूरता सिर्फ घोड़ों के ही साथ होती है? तब क्या हो जब जानवरों पर अत्याचार करने में पेटा ही सबसे आगे खड़ा पाया जाये!

दरअसल साल 2017 में एक अमेरिकी वेबसाइट हफ़ पोस्ट पर एक लेख प्रकाशित हुआ था। इसे लिखने वाले नो किल एडवोकेसी सेंटर के निदेशक नाथन जे. विनोग्राद ने बताया था कि 8 अक्टूबर 2014 को, पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स यानि पेटा के दो कर्मचारी एक वेन लेकर वर्जीनिया में रहने वाले एक छोटे समुदाय में गये, जहां 1,000 से कम लोग रहते थे। ये कर्मचारी कई हफ्तों से इस समुदाय के आसपास घूम रहे थे। इन्हें पता था कि कौन कहाँ रहता है और किसके पास कुत्ते और बिल्लियाँ हैं। ये कर्मचारी इनके कुत्तों को बिस्कुट देने लगे, टीकाकरण, नसबंदी व अन्य पेटा सेवाओं को बढ़ावा देने लगे। इसी बीच यहाँ एक एक परिवार के पास एक तीन साल का पालतू कुत्ता था। परिवार घर पर नहीं था तो पेटा के कर्मचारियों ने उसे बिस्किट फेंके और उसे पकड़ लिया।

बताया जाता है वर्जीनिया में कानून के अनुसार किसी आवारा कुत्ते को मारे जाने से पहले पांच दिनों तक किसी जगह रखने की आवश्यकता होती है। लेकिन पेटा ने ऐसा नहीं किया और कुत्ते को कुछ ही घंटो में जहर देकर मार डाला। जब इस बात की भनक उक्त परिवार को लगी तो उन्होंने पेटा पर मुकदमा दायर कर दिया। शुरू में पेटा ने दलीलें दी कि कुत्ता बेकार था। आवारा था, लफंगा था, रिकॉर्ड बदले बहस हुई। अंत में नतीजा ये हुआ कि पेटा को कुत्ते की मौत का 49 हजार डॉलर का मुआवजा कुत्ते के मालिक परिवार को देना पड़ा।

इसके बाद जो जाँच हुई उसमें पेटा का पशु प्रेम उजागर हो गया। यहाँ घोड़े और गाय के दूध पर अमूल को घसीटने वाली, भेड़ के बाल उतारकर बेचने से आहत होने वाली पेटा ने उस दौरान एक अकेले कुत्ते को नहीं मारा। बल्कि केवल 2014 में, पेटा ने अलग जगह से छुडाये गये 2,626 पशुओं में से 2,324 को मार डाला। सिर्फ एक या दो फीसदी पशु ही ऐसे थे जिन्हें पेटा ने किसी को गोद दिया। इसके अलावा साल 2015 में पेटा ने 1,494 पशुओं को मार डाला और 2016 में पेटा के लोगों ने 1,442 पशुओं को मौत के घाट उतार दिया गया। मसलन अगर कोई समुदाय जानवरों की हत्या के लिए बकरीद मनाता है तो पेटा भी कम नहीं है।

.....संस्थाएं जब अपने मूल उद्देश्य से भटककर व्यापारिक हो जायें तब ऐसी चीजें होना स्वभाविक हो जाता है। तब संस्था पशुओं की आड़ में एजेंडे चलाने लगती है। तब लोग इनका व्यक्तिगत हित के लिए उपयोग करने लगते हैं। जैसे अभी थोड़े समय पहले की बात है जब पेटा ने अमूल इंडिया से डेयरी दूध के बजाय शाकाहारी दूध का प्रोडक्शन करने का अनुरोध किया था। यानि पेटा की नजर में दूध भी मासांहार की श्रेणी में आता है। इसे निकालने में भी गाय भेंस इन्हें पीड़ित नजर आने लगी हैं। तब पेटा कहता है लेब में बना दूध इस्तेमाल करना चाहिए यानि रासायनिक दूध पीना चाहिए। अब रासायनिक दूध ना तो किसान बना सकता ना छोटी मोटी डेयरी चलाने वाले। आधुनिक मशीनों द्वारा बड़ी-बड़ी कंपनी ही रासयनिक दूध बना सकती हैं और बेच सकती हैं। .....

हफ़पोस्ट के अनुसार पेटा के कार्यकर्ता धोखे से, चोरी से या झूठ बोलकर पशुओं को उठाते हैं और उन्हें जहर देकर मार देते हैं। जबकि पेटा ये दावा करता है कि जिन पशुओं को वह मारता है, उनमें से अधिकतर गोद लेने के लायक ही नहीं होते हैं। लेकिन आंकड़े इस बात का समर्थन नहीं करते। क्योंकि जिन पशुओं को पेटा अपने कब्जे में लेता है, उनमें से अधिकतर हट्टे-कट्टे होते हैं। लेकिन उन्हें भी कब्जे में लेकर जहर देकर मार दिया जाता है। आखिर पेटा का ये कैसा पशु प्रेम है कि यदि पशु दूसरे के पास है वो पीड़ित है? पालतू बिल्ली पीड़ित, पालतू कुत्ता पीड़ित, घोड़े पीड़ित, बैल पीड़ित पर जैसे ही पेटा इन्हें लेकर जहर देकर मौत की नींद सुला देता है तो उसे पशु प्रेम कहा जाता है? सिर्फ इतना ही नही पेटा एक तरफ तो पशुओं की हत्या की निंदा करने के लिए सड़कों पर उतरता है, जबकि दूसरे में से वे बेजुबान पशुओं की हत्या करता है साथ ही अपने हत्यारे कर्मचारियों की स्तुति गाते हुए उन्हें बचाने कोर्ट में खड़ा हो जाता है।

असल में पेटा जैसी संस्थाएं जब अपने मूल उद्देश्य से भटककर व्यापारिक हो जाये तब ऐसी चीजें होना स्वभाविक हो जाता है। तब संस्था पशुओं की आड़ में एजेंडे चलाने लगती है। तब लोग इनका व्यक्तिगत हित के लिए उपयोग करने लगते हैं। जैसे अभी थोड़े समय पहले की बात है जब पेटा ने अमूल इंडिया से डेयरी दूध के बजाय शाकाहारी दूध का प्रोडक्शन करने का अनुरोध किया था। यानि पेटा की नजर में दूध भी मासांहार की श्रेणी में आता है। इसे निकालने में भी गाय भेंस इन्हें पीड़ित नजर आने लगी है। तब पेटा कहता है लेब में बना दूध इस्तेमाल करना चाहिए यानि रासायनिक दूध पीना चाहिए।

- शेष पृष्ठ 3 पर

स्वाध्याय मित्र लेख

पंच-तत्व को समझें और इसका सम्मान करें, इसी से बनी हुई है हमारी देह!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वाध्याय मित्र योजना के अन्तर्गत श्री सुधीर कुमार बंसल जी , ज्वाइंट सैक्रेटरी, आर्यसमाज सैन्ट्रल, सै. 15, फरीदाबाद द्वारा 'पंच तत्व को समझें और इसका सम्मान करें विषय पर आधारित लेख बहुत ही प्रेरणाप्रद और सारगर्भित है।

हम आर्यसन्देश के सभी प्रबुद्ध पाठकों, आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारियों से निवेदन करते हैं कि आप भी सभा द्वारा स्वाध्याय मित्र योजना के अन्तर्गत वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय के अनुसार अपना लेख हमें भेज सकते हैं। जिसे हम आर्य सन्देश के आगामी अंकों में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे। - सम्पादक

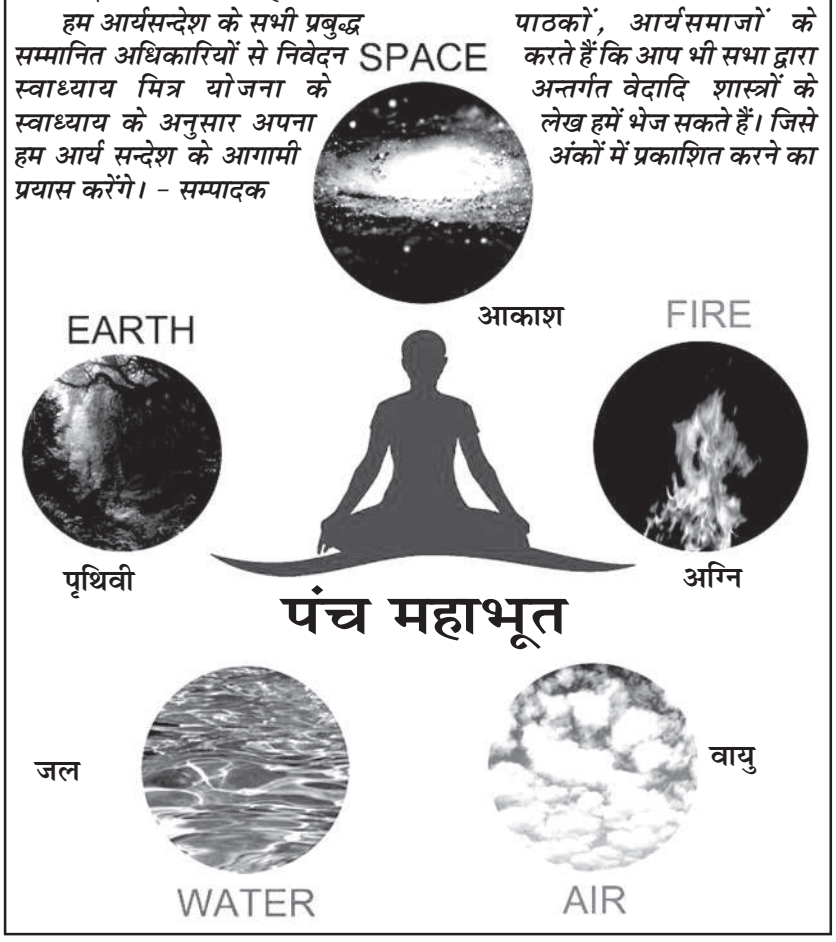

हिन्दू धर्म के अनुसार हमारा ब्रह्मांड, धरती, जीव, जन्तु, प्राणी और मनुष्य सभी का निर्माण आठ तत्वों से हुआ है। इन आठ तत्वों में से पांच तत्वों को हम सभी जानते हैं। आइये, जानते हैं वो पांच तत्व क्या हैं।

हिन्दू धर्म के अनुसार इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति-क्रम इस प्रकार से है- अनंत-महत्-अंधकार-आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी। अनन्त, जिसे आत्मा कहते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार, ये प्रकृति के आठ तत्व हैं। उक्त सभी की उत्पत्ति आत्मा या ब्रम्ह की उपस्थिति के कारण है।

आकाश के पश्चात वायु, वायु के पश्चात अग्नि, अग्नि के पश्चात जल, जल के पश्चात पृथ्वी, पृथ्वी से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष, अर्थात शरीर उत्पन्न होता है।

- तैत्तिरीय उपनिषद

1. पृथ्वी तत्व - इसे जड़ जगत का हिस्सा कहते हैं। हमारी देह जो दिखाई देती है वह भी जड़ जगत का हिस्सा है और पृथ्वी भी। इसी से हमारा भौतिक शरीर बना है, लेकिन उसमें तब तक जान नहीं आ सकती जब तक की अन्य तत्व उसका हिस्सा न बनें । जिन तत्वों, धातुओं और अधातुओं से पृथ्वी बनी है उन्हीं से यह हमारा शरीर भी बना है।

2. जल तत्व - जल से ही जड़-जगत की उत्पत्ति हुई है। हमारे शरीर में लगभग 70 प्रतिशत जल विद्यमान है उसी तरह जिस तरह कि धरती पर जल विद्यमान है। जितने भी तरल तत्व जो शरीर और इस धरती में बह रहे हैं वो सब जल तत्व ही हैं। चाहे वो पानी हो, खून हो, वसा हो, शरीर में बनने वाले सभी तरह के रस और एंजाइम हों।

3. अग्नि तत्व - अग्नि से जल की उत्पत्ति मानी गई है। हमारे शरीर में अग्नि ऊर्जा के रूप में विद्यमान है। इस अग्नि के कारण ही हमारा शरीर चलायमान है। अग्नि तत्व ऊर्जा, ऊष्मा, शक्ति और ताप का प्रतीक है। हमारे शरीर में जितनी भी गर्माहट है वो सब अग्नि तत्व ही है। यही अग्नि तत्व भोजन को पचाकर शरीर को निरोगी रखता है। ये तत्व ही शरीर को बल और शक्ति प्रदान करता है।

4. वायु तत्व - वायु के कारण ही अग्नि की उत्पत्ति मानी गई है। हमारे शरीर में वायु प्राणवायु के रूप में विद्यमान है। शरीर से वायु के बाहर निकल जाने से प्राण भी निकल जाते हैं। जितना भी प्राण है वो सब वायु तत्व है। धरती भी श्वांस ले रही है। वायु ही हमारी आयु भी है। जो हम सांस के रूप में हवा (ऑक्सीजन) लेते हैं, जिससे हमारा होना निश्चित है, जिससे हमारा जीवन है। वही वायु तत्व है।

5. आकाश तत्व - आकाश एक ऐसा तत्व है जिसमें पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु विद्यमान है। यह आकाश ही हमारे भीतर आत्मा का वाहक है। इस तत्व को महसूस करने के लिए साधना और समाधि की जरूरत होती है। ये आकाश तत्व अभौतिक रूप में मन है। जैसे आकाश अनन्त है वैसे ही मन की भी कोई सीमा नहीं है। जैसे आकाश में कभी बादल, कभी धूल और कभी आकाश बिल्कुल साफ होता है वैसे ही मन में भी कभी सुख, कभी दु:ख और कभी वो बिल्कुल शान्त रहता है। ये मन आकाश तत्व-रूप है जो शरीर में विद्यमान है।

इन पंच तत्व से ऊपर एक और तत्व है जिसे आत्मा कहते हैं। जिसके होने से ही ये तत्व अपना काम करते हैं, इन्हीं पांच तत्वों को सामूहिक रूप से पंचतत्व कहा जाता है। इनमें से शरीर में एक भी न हो तो बाकी चारों भी नहीं रहते हैं। किसी एक का बाहर निकल जाना ही मृत्यु कहलाता है। आत्मा को प्रकट जगत में होने के लिए इन्हीं पंच तत्वों की आवश्यकता होती है। जो मनुष्य इन पंच तत्वों के महत्व को समझकर इनका सम्मान और इनको पोषित करता है वह निरोगी रहकर दीर्घजीवी होता है।

निचोड़- आन्तरिक स्वरूप चर्चा में है। यह आन्तरिक रूप अभौतिक है। यह अभौतिक स्वरूप नित्य, चेतन, अविकार और परिवर्तन रहित है। अत: आत्मा अविनाशी है। पर यह भौतिक देह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश - इन पांच तत्वों का मेल है जिसे पंचीकरण कहते हैं। पंचभूतों का कटना, जलना, गीला होना (अर्थात् गलना-सूखना) आदि विकारी परिवर्तन से शरीर से जुड़े हैं। इसीलिए भौतिक देह अग्निदाह, जल-भंजन, सूखने की क्रिया से जकड़े रहती हैं। अत: भौतिक शरीर जीर्ण-शीर्ण हो सकता है। परन्तु इस शरीर में प्रविष्ट आत्मा (रूपी पुंज) जो अभौतिक है, पंच-भूतात्मक शरीर को चौतन्यता प्रदान करता है, आत्मा पुल्लिंग है, वह अमर है, अविनाशी है। *- सुधीर कुमार बंसल,*

संयुक्त सचिव, आर्यसमाज
सैक्टर 15, फरीदाबाद (हरियाणा)

पृष्ठ 2 का शेष

पेटा की लगाम घोड़ों पर या भारतीय रीति-रिवाजों पर?

अब रासायनिक दूध ना तो किसान बना सकता ना छोटी मोटी डेयरी चलाने वाले। आधुनिक मशीनों द्वारा बड़ी-बड़ी कंपनी ही रासयनिक दूध बना सकती है और बेच सकती है।

शायद इसी कारण अमूल कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर आर एस सोढी ने पेटा से सवाल किया था कि हमारे साथ करोडो डेयरी किसान जुड़े हैं। जिनमें से 70 फीसदी भूमिहीन हैं, उनकी आजीविका चल रही है। साथ ही सोढी जी ने यह भी पूछा था कि कितने लोग वास्तव में लैब में बना दूध खरीद सकते हैं? क्या ये लेब 10 करोड़ डेयरी किसानों को आजीविका देंगे ?

यानि पेटा की सोच और काम करने के ढंग में कई चीजें साफ़ दिखाई देने लगी हैं। पेटा दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडु में हिदुओं द्वारा मनाए जाने वाले जलीकट्टू जो उनकी एक बैल प्रतियोगिता होती है उसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाकर पूरी तरह प्रतिबंध लगवा देता है। लेकिन विश्व भर के रेसकोर्स में घोड़ो की दौड़ में को घोड़ा उसे पीड़ित दिखा नहीं देता। तब पेटा को दिखाई देते हैं बारात के घोड़े क्योंकि वह बहुसंख्यक वर्ग की विवाह की एक परम्परा से जुड़े होते है।

दूसरा पेटा बकरीद पर सिर्फ एक ट्वीट करता है। मात्र एक ट्वीट। लेकिन बहुसंख्यक वर्ग के रीति-रिवाजों पर शोर मचाता हुआ जिस तरीके से कोर्ट पहुँचता है। इसे देखकर लगता है कि हो सकता है आगे पेटा पौराणिक मान्यताओं को मानने वालों की शेरों वाली माता के शेर, शिव के नंदी, माँ सरस्वती का हंस भी पीड़ित नजर आने लगे, कहे कि देखो ये भी पशुओं का शोषण है! यही कारण है कि इन्हीं दोहरे मापदंडों की वजह से भारत में पेटा पर प्रतिबंध लगाने की मांग भी कई बार उठ चुकी है। जबकि अगर पेटा निष्पक्ष होकर अपना पशु प्रेम दिखाए अपने द्वारा क़त्ल किये गये पशुओं पर सार्वजनिक तौर पर माफ़ी मांगे और जिस दिन पेटा 56 मजहबी देशों सहित विश्व भर में बकरीद पर बकरों की हत्या के खिलाफ जमकर खड़ा हो जायेगा। उस दिन लगेगा कि इनका पशु प्रेम सच्चा और ये अपना धर्म निभा रहे हैं। अन्यथा ये केवल हिन्दू परम्पराओं को बर्बाद करने के लिए बनाई गयी पश्चिमी देशों की एजेंसी है, जो उनके रासयनिक कबाड़ और सोच को भारत में लाँच करने का काम कर रही है। *- सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पितरों का वास्तविक श्राद्ध-तर्पण एवं जीवितों की सुसेवा

- आचार्य रामज्ञानी आर्य

आश्विन मास का कृष्ण पक्ष पितृ पक्ष कहलाता है। इस पक्ष में पौराणिक वर्ग भोजन वस्त्र देकर मृतकों के श्राद्ध एवं तर्पण कर आत्मसंतुष्टि का जो प्रदर्शन करते हैं उनके ज्ञान लोचन के लिए, यह आवश्यक है कि हम लोग वैदिक दृष्टिकोण की वास्तविकता को समझें।

सर्वप्रथम अन्त्येष्टि संस्कार, श्राद्ध एवं तर्पण पर विचार करेंगे। मरने वाला व्यक्ति तो इस संसार से चला गया वह तो **''यथा कर्मम् तथा श्रुतम्''** ज्ञान व कर्म के अनुसार मोक्ष की स्थिति को या अन्य किसी योनि को प्राप्त करेगा परन्तु उसका जो पड़ा हुआ मृत शरीर है उसको संस्कारित करना होता है। अत: अन्त्येष्टि कर्म, उसको कहते हैं, जो शरीर का अन्तिम संस्कार है। उसके आगे मृत शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। **''भस्मान्तम् शरीरम्''**। यजु. 40/15 यह स्पष्ट हो चुका है कि दाह कर्म और अस्थि संचयन से पृथक् मृतक के लिए कोई दूसरा कर्म नहीं है। इसलिए दाह कर्म करना ही सर्वोत्तम है।

श्राद्ध करना चाहिए या नहीं? यह प्रश्न सदा आता रहता है कि श्राद्ध करना चाहिए। जीवित माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, गुरुजनों, एवं विद्वान लोगों की अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक सेवा करनी चाहिए इसी का नाम श्राद्ध है। 'पितर' कौन हैं? इस पर जरा सोचें - पारक्षणे धातु से पितर शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है-पालक, रक्षक और पिता। पिता और पितर दोनों सामानार्थक हैं किन्तु जीवित माता-पिता ही पालन और रक्षा कर सकते हैं। अत: मृतकों को पितर संज्ञा मानना सर्वथा भूल है क्योंकि रक्षा कार्य मृतकों द्वारा असम्भव है। पिता और पितर का का प्रयोग शास्त्रों में जीवित के लिए आया है। व्र.पु. में भी बताया गया है कि विद्या देने वाला, अन्न देने वाला, जन्म देने वाला, कन्या देनेवाला, रक्षा करने वाला और अग्रज ये सब पितर कहे जाते हैं। गीता में भी आया है कि अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में खड़े हुओं को पितर की संज्ञा दी है। किसी पितर को जमीन में दबा देना कोई पुण्य काम नहीं है परन्तु मृतक शरीर को दबाना ही लोग पुण्य समझते हैं। आत्मा को तो सभी अविनाशी मानते हैं सभी जीव अपना कर्मफल भोगने के लिए संसार क्षेत्र में आते हैं। जो जैसा करेगा वैसा पायेगा। किये हुए कर्म का फल निश्चित रूप से भोगना पड़ता है। क्योंकि कहा गया है-**"अवश्यमेव भोक्तव्यमकृतम् कर्म शुभाशुभम्"**।। पितर संज्ञा किनको? पितर शब्द वहुवचन है अत: **''पान्ति रक्षन्तीति पितर:''** इसके अनुसार वे सभी पितर हुए जो हमारी किसी भी प्रकार की रक्षा करने में समर्थ हैं। पितृपक्ष में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, मातामही इन तीनों पीढ़ियों के पितरों का ही श्राद्ध करने का विधान है क्योंकि इनसे ही पितर हमें धर्मोपदेश देकर अधर्म आचरण और भौतिक कष्टों से बचा सकते हैं। इससे आगे पितरों का जीवित रह पाना प्राय: संम्भव नहीं है। पितर मृत वंशजों की कोई रूढ़ी संज्ञा नहीं है जैसा कि आजकल समझा जाता है। बल्कि पुत्र ही आगे चलकर पितर कहलाते हैं इस विषय में **''पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति''**।। यजु. 25/22 का यह मंत्राशं प्रमाण स्वरूप है।

..... शास्त्रों में गृहस्थों के लिये पंचमहायज्ञ दैनिक कर्म बताए गए हैं जिनमें से एक पितृयज्ञ है जिसमें विद्वान, आचार्य, माता-पिता और वृद्ध जनों की सेवा और सत्कार करना है जो जीवित का ही होता है मृतक का नहीं। .....

वेदों के अनेक मंत्रों में-**''ते आगमन्तु ते इह श्रुवन्तवधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्''** (यजु. 19/57) **पितर: शुन्धध्वम्** (यजु. 19/36) पितर इस यज्ञ वेदी पर बैंठे, हमें उपदेश दें, और हमारी रक्षा करें आदि प्रार्थनायें की गयी हैं। ये सब जीवित पितर ही कर सकते हैं। अत: जीवितों का ही श्राद्ध किया जाये मरे हुए का नहीं यही वैदिक परम्परा है। संभवत: तभी ये हमारे वृद्ध जीवित पितर जो पदार्थ जो आसानी से खा सकते हैं जैसे खीर-पूड़ी, भात और मक्खन आदि कोमल पदार्थ देने की परम्परा आज भी चल रही है। श्राद्ध क्या है? आइये इस पर विचार करें।

'श्रत' सत्य का नाम है। एवं ऋत्सत्यम् ददाति यथा क्रिया सा श्रद्धा। जैसा कि पहले बतलाया गया पितर का अर्थ रक्षा करने वाला है जीवित व्यक्ति ही रक्षा कर सकता है मृत व्यक्ति नहीं। **''तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्''**। जिस कर्म से माता-पिता प्रसन्न हों उसी का नाम तर्पण है। जो जीवित के लिये है और उन्हीं के लिये सम्भव है मृतकों के लिये नहीं। शास्त्रों में गृहस्थों के लिये पंचमहायज्ञ दैनिक कर्म बताए गए हैं जिनमें से एक पितृयज्ञ है जिसमें विद्वान, आचार्य, माता-पिता और वृद्ध जनों की सेवा और सत्कार करना है जो जीवित का ही होता है मृतक का नहीं। वेद, शास्त्र, उपनिषद, गीता और महाभारत आदि धर्मग्रन्थों में पुर्नजन्म के अनेक प्रमाण हैं और इससे सम्बन्धित कई सत्य घटनायें प्रकाश में भी आ चुकी है। गीता के अध्याय 2 श्लोक 22 में आया है कि जिस प्रकार पुराने वस्त्रों को छोड़ कर मानव नये वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नये शरीर को धारण करता है। इसी प्रकार महाभारत के वनपर्व अ. -183 में भी आया है कि आयु पूरी होने पर जीव इस जर्जर स्थूल शरीर का त्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होते हैं। अस्तु! जीव एक शरीर का त्याग कर तुरन्त दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो जाता है तो मृत माता-पिता आदि पितृपक्ष में भोजन करने कैसे आ सकते हैं? यदि कहिये कि आते हैं तो पितृपक्ष में लाखों घरों में भरना चाहिए क्योकि जब तक नये शरीर व घर को छोड़ेंगे नहीं, जब तक पुराने घरों में भोजन करने कैसे आयेंगे। दूसरी योनि में रहकर भी पूर्व जन्म के माता-पिता आदि को भोजन नहीं पहुँच सकता क्योंकि एक तो यह पता नहीं कि माता-पिता आदि कहां जन्म लिये हैं और दूसरे एक का खाया हुआ भोजन दूसरे के पेट में नहीं जाता। अत: माता-पिता आदि के लिए ब्राह्मणों और कौवों को खिलाने से उन्हें भोजन कदापि नहीं पहुँच सकता। विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं उनमें से अद्वितीय समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती एक थे जिनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं ग्राह्य व वर्तमान समय में ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी परम्पराएं चतुर्दिक छाई हुई हैं। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त सती प्रथा, दहेज, बाल विवाह, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, पिण्डदान एवं तर्पण आदि जैसी कुप्रथाओं के प्रतिकूल अपना एक अद्वितीय आन्दोलन छेड़ा था। आइये विचार करें तथा **''सत्यमेव जयते नानृतम्''** के उद्घोष को उजागर करें।

- आर्यसमाज लार, देवरिया (उ.प्र.)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली के अन्तर्गत निर्माणाधीन

ओम प्रेमसुधा दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बोकाजान (असम) के विस्तार कार्य का नीरिक्षण

विद्यालय में यज्ञशाला, मुख्य द्वार एवं अन्य विस्तार कार्य को देखने के लिए दिल्ली से पहुंचे अधिकारीगण

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर विशेष

"हिन्दी-दिवस" और हिन्दुस्तान

भारत वर्ष एक ऐसा राष्ट्र है जो विश्व का सबसे बड़ा गणराज्य माना जाता है। और इसे सम्प्रभुत्व सम्पन्न कहा जाता है। तथा विश्व के सबसे बड़े संविधान का गौरव भी प्राप्त है। इसको अन्य कई नामों से भी पुकारा जाता है जिनमें से एक है हिन्दुस्तान, जिसकी भाषा हिन्दी है। और इसकी सनातन आर्य जाति स्वयं को हिन्दू कहने पर गर्व करती है। लेकिन-हाय री! व्यवस्था, आज हिन्दी (आर्य भाषा) अपने सुदिनों की बाट जोह रही है। आज केवल उत्सव मनाने के लिए हिन्दी को पहचाना जा रहा है। भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। लेकिन कार्यप्रणाली अंग्रेजी में ही चलायमान है जबकि-संविधान में केवल 15 वर्षों के लिए राजकीय औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए सहायिका के रूप में ठहराया गया था। लेकिन आज एक सहायिका ने राजरानी पर आधिपत्य जमा अधिष्ठात्री बन बैठी है। और आर्यवर्त्त की आत्मा को तिल-तिल कर जीने के लिए विवश कर दिया गया है। जबकि भारतीय संस्कृति की अपनी एक विशिष्टता है। यहाँ का उत्कृष्ट साहित्य माता, मातृभूमि और मातृभाषा की श्रेष्ठता की कामना करता है। गाँधी जी ने बालक की प्रारम्भिक शिक्षा का वर्णन करते हुए कहा कि- "बालक की प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए।" महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा कि- **निज भाषा उन्नति अहो,**
सबै उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय के शूल।।

अर्थात् किसी भी राष्ट्र की तब तक सम्पूर्ण उन्नति नहीं हो सकती जब तक उसमें निज भाषा का पूर्ण विलय न हो। यदि हमें अपने संविधान का सम्मान और रक्षा भी करनी है तो हमें प्रथम हिन्दी की रक्षा भी करनी है। और लार्ड मैकाले की उस घोषणा को असत्य सिद्ध करना होगा कि- "भारतीय सम्पूर्ण ज्ञान भण्डार यूरोप के एक पुस्तकालय के बराबर भी नहीं है।" कहा जाता है कि जापान में तबतक किसी शब्द को प्रयोग नहीं किया जाता जब तक कि उसका रुपान्तरण उनकी अपनी भाषा जापानी में नहीं हो जाता। हम अनेक भौतिक उन्नतियों का अनुसरण तो करते हैं, बराबरी चाहते हैं लेकिन मौलिकताओं पर ध्यान नहीं देते हैं। वर्तमान में भारत के प्रधानमन्त्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने जापान के साथ अनेक विकास के मुद्दों पर समझौते किए जो भारत की दशा एवं दिशा को बदलना चाहते हैं। वहीं हमें अपने सम्मान अपने राष्ट्र और अपनी भाषा की भी रक्षा करनी है। नई सरकार के गठन के उपरान्त संसद में हिन्दी भाषा व्यवहार लागू करने पर कुछ राजनैतिकों ने विरोध जताया था। लेकिन राष्ट्र के हित में इस प्रकार का विरोधाभास नहीं होना चाहिए, वास्तव में मोदी जी का यह एक सराहनीय कदम रहा है क्योंकि भाषा ही तो जोड़ती है। इसलिए भाषा का सम्मान संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। क्योंकि समृद्ध भाषा से, समृद्ध साहित्य और समृद्ध साहित्य से ही समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

आज नहीं अब से ही हम निश्चय करें कि हमें हिन्दी को ही अपने व्यवहार की भाषा बनाए रखनी है। हम हिन्दी में ही बात करें, हिन्दी में हस्ताक्षर करें, हिन्दी का ही साहित्य पढ़े, पढ़ाएँ तथा हिन्दी में ही अन्य सन्देशों को प्रेषित करें, तभी हिन्दी की रक्षा हो सकती है, और हमारा 'हिन्दी-दिवस' मनाना सफल हो सकता है। क्योंकि हिन्दी ही हिन्द की आत्मा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

हिन्दी आत्मा हिन्द की लन्दन में है बन्द।
स्वतन्त्रता के बाद भी स्वेच्छा से परतन्त्र।।

अर्थात् वर्तमान समय में जो स्थान हिन्दी का होना चाहिए था वह अंग्रेजी को प्राप्त है और स्वतंत्रता के 67 वर्षों के पश्चात् भी हम अपनी भाषा को स्वतंत्र न करा पाए आज भी अंग्रेजों की भाषा उनके नियमों में हम अपनी इच्छा से बंधते जा रहे हैं, जो भारतवर्ष तथा उसकी भाषा के लिए अच्छा नहीं है यदि अब भी हम चेत जाएं तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व का शिरोमणी होगा। अतः हमें श्रद्धा से, स्वाभिमान से, तथा पूर्णरूप से हिन्दी को अपना कर इस शुभ दिवस को शुभ-संवत्सर बना देना है, जो वास्तव मे अपेक्षित है।

आर्यसमाज विकास पुरी बाहरी रिंग रोड, नई दिल्ली में स्व. यशपाल सचदेव स्मृति फ्री हैल्थ चैकअप कैम्प एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्य समाज की मान्यता के अनुसार ही योगिराज श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा विश्व में स्थापित होगी - डॉ. सत्यपाल सिंह

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी के तत्वाधान में 5 सितंबर, 2021 प्रातः 8 से 12 तक स्व. श्री यशपाल सचदेव जी की स्मृति में फ्री हैल्थ चैकअप कैम्प का आयोजन किया गया। इस शिविर में 100 व्यक्तियों ने लाभ प्राप्त किया। अनेक लोगों ने ओर अधिक सेवाओं को भी प्रदान करने का निवेदन किया और आर्यसमाज के अधिकारियों की ओर से उन्हें पूर्ण आश्वासन दिया गया। इसी दिन सायं 6 से 9 बजे तक श्रावणी पर्व, श्री कृष्ण जन्मोत्सव एवं शिक्षक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर भजन सम्राट श्री संदीप जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत करके सभी का दिल जीत लिया।

माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी सांसद एवं कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य में सत्य एवं सत्यमेव जयते पर बहुत ही सुन्दर प्रकाश डाला।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, केन्द्रीय आर्य सभा के महामंत्री आर्य सतीश चड्ढा जी, श्रीमती सरिता जिन्दल निगम पार्षद, श्री यशपाल आर्य पूर्व निगम पार्षद एवं चैयरमेन शिक्षा समिति, वैदिक विद्वान आचार्य श्री चन्द्रशेखर जी शास्त्री और गणमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाकर आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी नयी दिल्ली का सर ऊंचा किया। आर्यसमाज की ओर से उपस्थित शिक्षकों को स्मृति चिन्ह भेंट करके उन्हें सम्मानित किया गया।

आर्यसमाज के मंत्री श्री डालेश त्यागी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं प्रधान ललित कुमार चौधरी जी ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

- ***मन्त्री***

जिस देश के निर्माण में आर्यसमाज की मुख्य भूमिका थी, वर्तमान मे परिस्थितियों में उसकी रक्षा करना भी हमारा दायित्व - विनय आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं प्रमुख आर्य जनों विशेष गोष्ठी सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड और आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून ने धामावाला में शिविर लगाया। मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने हिंदू - वैदिक संस्कृति की वर्तमान दशा पर सजग रहने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि बुद्धिजीवी वर्ग के पास चिंतन का समय ज्यादा नहीं। आर्य समाज के योगदान - इतिहास को जानना जरूरी है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड की नियमावली के नए संस्करण का विमोचन भी किया गया। उन्होंने बताया कि वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के विफल होने पर जो निराशा देश में छाई थी, उसे दूर करने और नई ऊर्जा पैदा करने का काम आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' के अष्टम सम्मुल्लास में स्वराज्य की महिमा पर लिखे शब्द, 'कोई कितना ही करे, लेकिन जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है' की अवधारणा सामने रखी। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता का पहला बीज स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही बोया था। 1879 में लाहौर में विदेशी वस्तुओं की पहली होली आर्य समाज ने जलाई। उन्होंने आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरित होकर देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार उधम सिंह, सरदार करतार सिंह सराभा, वीर सावरकर समेत कई शहीदों को याद किया। अंग्रेजी शासन के समय वैदिक शिक्षा को गुरुकुल, आर्य स्कूल और डीएवी कॉलेज के रूप में नई दिशा देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज और पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी के योगदान को भी याद किया। महात्मा गांधी को अफ्रीका से भारत लाने का श्रेय भाई परमानन्द को जाता है। इस मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड के पूर्व प्रधान डॉ.विनय विद्यालंकार, वर्तमान प्रधान दयानन्द तिवारी, प्रांतीय प्रधान ज्ञानचन्द गुप्ता, आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान गंभीर सिंह सिंधवाल, जिला सभा मंत्री रामबाबू सैनी आदि उपस्थित थे। - ***मन्त्री***

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

In The Punjab and The U.P.

Swami Dayanand then paid a visit to the Punjab. He visited every important town in this province and delivered lectures there. People flocked to his lectures. Wherever he went he produced a very good impression. After sometime he established an Arya Samaj at Lahore. Many educated personsjoined theArya Samaj and became its great supporters.

Though Swami Dayanand was treated by most people with respect there were some who tried to rob him of his good name. At Amritsar, during one of his lectures, some people tried to create a disturbance. They even abused him loudly. A few went so far as to throw stones and brickbats at him. But Swami Dayanand did not mind these insults. He only said, "Those who throw stones at me today will one day shower flowers on me. If! am abused now by some I do not mind, because I know these very people will hold me in high esteem some day."

Swami Dayanand was not afraid of anything. He never hesitated to speak the truth. He was, above all, a great lover of the Vedic religion and tried to defend it at all costs. At Amritsar, it is said, the Cornmissioner, who was a Christian methim and began to speak ill of the Vedic religion. He said that it was as frail as a piece of cotton. But Swamiji thenreplied, "This is not so. It is as strong as an anchor of steel."

Swami Dayanand visited many places in the Punjab such as Gurdaspur, Jalandhar, Ferozepur, Rawalpindi, Jhelum, Gujrat, Gujranwala, Multan and Wazirabad. At Jalandhar a very interesting thing happened. S. Bikram Singh was a rich and respectable citizen of that place. He often came to listen to Swami Dayanand's discourses. One of these discourses was on Brahmcharya, in which Swami Dayanand dwelt on its advantages. In it he said, "Brahmcharya works wonders. It prolongs a man's life. It fortifies one's character. It enables a man to hold fast to his convictions even at the cost of his life." After listening to all this the Sardar said, "How can you prove all this?" Swami Dayanand said, "One of these days you will see for yourse£"

.....This is the Guru Dakhshina that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them.....

The Sardarwas in the habit of driving in his coach every evening. Swami Dayanand knew this and followed him quietly one evening. The Sardar had not gone very far, when he found that the horses refused to move any further. The coachman did his very best, but the coach did not move. The horses exerted themselves, but it was of no avail. This went on for some time till the Sardar lost all patience. It seemed to him as if somebody was holding the coach back from behind. When the Sardar looked behind he found that Swami Dayanand was there, holding the back wheel with nothing but his naked hands. When he Sardar saw this, his surprise knew no bounds. At once he real ized what a fine proof Swami Dayanand had given of the power of Brahmcharya.

Swami Dayanand went to Wazirabad, where he delivered many lectures. One day while he was making a speech some evil-minded person flung a stone at him. This struck his forehead and hurt him very badly. Blood began to flow, but he quietly wiped it off with a piece of cloth and went on with his speech. This self-possession of Swami Dayanand impressed people very much and hey all admired him for it. It was no wonder that afterwards the Punjab became the biggest centre of Swami Dayanand's work.

The United Provinces of Agra and Oudh had a great attraction for Swami Dayanand. The people of that province were his great admirers and loved to have him in their midst. So they sent many invitations to him to come there. In the end, he obliged them by visiting their province. First he went to Roorkee where his lectures were

attended not only by Indians but also by Europeans, including the Commander-in-Chief. Then he visited Aligarh, Ajmer, Meerut and other places. Wherever he went hundreds of people listened to his lectures.

In 1878 Swami Dayanand again went to Hardwar where the Kumbh fair was being held. But there was a great difference between the Swami Dayanand of that day and the one of an earlier day. Years before he had gone there without friends or followers, and his message was heard by few. But now Swami Dayanand was a well-known person. People now regarded him as a fearless advocate of truth, and a lover of the Vedas. He had a warm reception.

On his arrival he met an eighty-year-old sannyasi name Anand Ghan. He had a large number of disciples with him and went to attend Swami's lecture. On hearing the lecture he felt drawn towards the Swami on account of his great learning and purity. So he became one of the Swami's disciples, and received the following beautiful piece of advice. "God is everywhere. He is ail-powerful and knows every-thing. We should worship Him only and no one else. Real peace of mind can be attained only when one follows the Vedic religion."

So great was the reputation of Swami Dayanand as speaker and saint that he was in demand everywhere. He was, therefore, asked to visit Dehradun, Saharnpur, Meerut, Muradabad, Bareilly, Farukhabad, Patna and Mirzapur. He even went to Benares once again. While he was there he had another discussion with the Pandits.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

स्त्रीश्वश्रुश्वशुरादिसेव्यसेवक एवं ननन्दश्भ्रातश्जायावादप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
390. हे श्वश्रु! सेवामाज्ञापय, किं कुर्याम्?	हे सास! सेवा की आज्ञा कीजिये, क्या करूं?
391. सुभगे! जलं देहि।	सुभगे! जल दे।
392. गृहाणेदमस्ति।	लीजिये यह है।
393. हे श्वशुर! भवान् किमिच्छत्याज्ञापयतु।	हे श्वसुर! आपकी क्या इच्छा है आज्ञा दें।
394. हे वशंवदे! त्वत्सेवया सन्तुष्टोऽस्मि।	हे वशंवदे! तेरी सेवा से संतुष्ट हूं।
395. हे ननन्दरिहागच्छ वार्त्तालापं कुर्याव।	हे ननन्द! यहां आओ बातचीत करें।
396. वद भ्रातृजाये! किमिच्छसि?	कहो भौजाई! क्या इच्छा है?
397. तव पतिः कीदृशोऽस्ति?	तेरा पति कैसा है?
398. अतीव सुखप्रदो यथा तव।	अत्यन्त सुख देने वाला है, जैसा तेरा।
399. मया त्वीदृशः पतिः सौभाग्येन लब्धोऽस्ति।	मैने तो इस प्रकार का पति अच्छे भाग्य से पाया है।
400. कदाचिदप्रियं तु न करोति?	कभी प्रतिकूल तो नहीं करता?
401. कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं वर्द्धयति।	कभी नहीं किन्तु सब दिन प्रीति बढ़ाता है।
402. पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः कृतोऽतः सदा दुःखिनौ वर्त्तेते।	देखो, इन दोनों ने बाल्यावस्था में विवाह किया है, इससे सदा दुःखी रहते हैं।
403. यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णा न्यग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव नास्ति निर्बलत्वात्।	जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं, आगे लड़का होने की आशा ही नहीं है निर्बलता से।
404. पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्य पत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते।	देखो तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के दो वर्ष के पीछे होते जाते हैं।
405. सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते च सुशीलत्वात्।	सब काल में प्रसन्न और बढ़ते जाते हैं सुशीलता से।

क्रमशः – साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

सिविल सेवा प्रतियोगी कृपया ध्यान दें!

लोक संघ सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा की तैयारियों के लिए आर्य समाज की एक पहल

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

सुशीलराज आर्य प्रतिभा केन्द्र, हरि नगर, नई दिल्ली

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के प्रशिक्षण घोषणा की गई है। संस्थान द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को दिल्ली में छात्रावास, कोचिंग, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सहित सभी सुविधायें नि:शुल्क प्रदान की जायेंगी। आर्यसमाज की इस नि:शुल्क सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक उम्मीदवार www.pratibhavikas.org ऑनलाइन आवेदन करें। **ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021** है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें- 9311721172, Email : dss.pratibha@gmail.com

ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021

प्रथम पृष्ठ का शेष

महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरु की आज्ञा के सामने नतमस्तक हो गए, उनके आदेश को शिरोधार्य करते हुए राष्ट्रनिर्माण और मानव सेवा के लिए जीवन भर सफलता पूर्वक अभियान चलाते रहे। जब तक संसार रहेगा और गुरु शिष्य के आदर्श की बात होगी तब तब गुरु के रूप में स्वामी विरजानन्द और शिष्य के रूप में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों की प्रेरणा के बिना बात पूरी नहीं होगी।

आज संसार में जो निरन्तर वेदज्ञान का प्रकाश फैला रहा है, परोपकार की भावना को साकार रूप प्रदान कर रहा है, मानवता की रक्षा करने के लिए संकल्पित है और मनुष्य मात्र के कल्याण की परिकल्पना कर रहा है, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा साधना के वैदिक मार्ग पर देश और दुनिया को अग्रसर करने की योजना चला रहा है, सामाजिक कुरीतियों ,अंधविश्वसों, ढोंग, पाखण्डों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए विश्व विख्यात आंदोलन कारी, अनोखी, अनूठी, अनुपम संस्था आर्य समाज का आधार, इसके जनक महर्षि दयानंद सरस्वती जी और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द जी ही हैं। अत: उनका ऋण केवल आर्य समाज पर ही नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानवजाति उनकी ऋण है। स्वामी विरजानन्द जी के 153 वे स्मृतिदिवस 14 सितम्बर 2021 को , हम उनकी प्रेरणाप्रद शिक्षाओं को, उनके त्याग, तपस्या और बलिदान को स्मरण करें, और संकल्प करें कि उनके महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बताए आदर्शो पर चलते हुए संसार का उपकार करने का व्रत धारण करें। व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द जी को शत शत नमन।

मेधावी छात्र एवं छात्राओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 08 सितम्बर 2021 बुधवार को आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर एवं स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपत्नी श्री प्रमोद

कुमार आर्य की नवम् पुण्यतिथि की पावन स्मृति में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं सैन्ट्रल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा 2019-20 एवं 2020-21 में अलवर जिले की हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र एवं छात्राओं के लिए शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से 13-14वॉ पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. रामनिवास यादव रहे। श्री विशन कालरा, इन्कम टैक्स अधिकारी द्वारा मेधावी छात्र/छात्राओं का उत्साहवर्धन किया गया। विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

इस अवसर पर सर्वश्री अशोक कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य, शिव कुमार कौशिक, प्रमोद कुमार आर्य, सौरभ कुमार आर्य, अनन्या आर्य, श्रेय आर्य, श्रीमती कमला शर्मा, हेमराज कल्ला, सरला आर्य, विभा आर्य, पूनम आर्य, कमल आर्य, डॉ. सी.पी.पालीवाल, कैलाश सोमवंशी, गिर्राज प्रसाद जायसवाल, दिनेका चन्द धानावत, हैहय क्षत्रिय समाज एवं आर्य समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। मंच संचालन बृजेन्द्र देव आर्य ने किया।

- अशोक कुमार आर्य, मुख्य ट्रस्टी

प्रेरक प्रसंग

एक अभूतपूर्व घटना

गुजरात में आगाखानीमत-जैसा एक और मत भी कभी बड़ा प्रभाव रखता था। इसे सत्पन्थ कहते थे। इसका अतीत तो कुछ और ही था, परन्तु आगे चलकर चतुर मुसलमानों के कारण सहस्त्रों अज्ञानी वा मूर्ख हिन्दू अपने मत से च्युत होकर 'कलमा' पढ़ने लग गये और हिन्दू होते हुए भी निकाह करवाते थे। आज आर्यसमाज के इतिहासकारों को भी यह तथ्य ज्ञात नहीं कि किन दिलजले आर्यवीरों के प्रयास से सहस्त्रों सत्पंथी धर्मभ्रष्ट हिन्दुओं की शुद्धि हुई। इन शुद्ध होनेवालों में कितने ही प्रख्यात क्षत्रिय, पटेल व सुशिक्षित गुजराती हिन्दू थे। हिन्दूसमाज आर्यसमाज के इस उपकार को कतई भूल चुका है।

सत्पन्थ एक इराणी ने चलाया था। उसका नाम इराणसा था। उसने अहमदाबाद के निकट पेराणा में एक वेद-पीठ स्थापित की। इराणसा के एक मुसलमान चेले ने इस वेद-पीठ को दरगाह बनाकर यज्ञेपवीत उतार-उतार कर पेराणा की दरगाह (वेदपीठ) में जगा करवाते रहे। यह दु:खदायी, परन्तु रोचक इतिहास पर कभी फिर लिखेंगे।

इसी सत्पन्थ में भुज कच्छ के एक सज्जन खेतसी भाई थे। इन खेतसी भाई ने अपने ग्राम के एक युवक शिवगुण भाई को सत्पन्थ में प्रविष्ट किया। शिवगुण भाई काम-धन्धे की खोज में कराची गये। खेतसी भाई भी वहीं थे। कराची में एक गुजराती आर्ययुवक पहुँचा। यह था धर्मवीर नारायणजी भाई पटेल। इस धर्मवीर को मुसलमान जान से मार डालने की धमकियाँ देते रहते थे। सत्पन्थ की जड़े उखाड़ने में इनका विशेष उद्योग रहा। इन नारायण भाई ने कराची में गुजराती युवकों की एक परिषद् बुलाई। परिषद् में पटेल ही अधिक थे। नारायणजी ने सत्पन्थ छोड़ने व वैदिक धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा दी। शिवगुण भाई ने समझा वेद र्ध में भी किसी मूर्ति की ही पूजा होती होगी। शिवगुण भाई ने सत्पन्थ छोड़ दिया, परन्तु किसी को बताया नहीं। ऐसा करने पर इनको वहाँ धन्धा न मिलता। खेतसी भाई को भी न बताया। *- क्रमश:*

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 13 सितम्बर, 2021 से रविवार 19 सितम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 16-17/09/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 सितम्बर, 2021

गुरुकुल आश्रम आमसेना, ओडिशा में भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

गुरुकुल तुरंगा (छत्तीसगढ़) में गुरुकुलीय बच्चों का उपनयन संस्कार

प्रतिष्ठा में,

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तक
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339
011-23360150

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं
वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

देश और समाज विभाजन के
षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

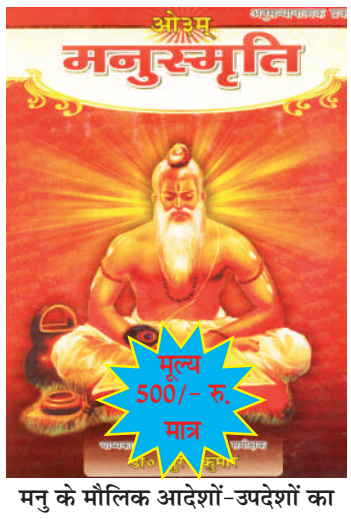

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का
प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील
महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह